IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मध्य प्रदेश की जनजातियों की स्थिति और जैव-विविधता संरक्षण: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

विवेक कुमार आर्य और **अरेंद्र सिंह सूर्यवंशी**

समाजशास्त्र विभाग, स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर, मध्य प्रदेश - 470228

सारांश

मध्य प्रदेश, जो भारत का एक प्रमुख राज्य है, अद्वितीय जैव-विविधता और समृद्ध जनजातीय संस्कृति का घर है। यहां की जनजातियाँ, जैसे गोंड, भील, बैगा, और कोरकू, अपनी परंपराओं, ज्ञान, और जीवन शैली के माध्यम से प्रकृति के साथ एक गहन संबंध रखती हैं। जैव-विविधता संरक्षण में इन जनजातियों की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि वे सदियों से जंगलों, जल स्रोतों, और वन्यजीवों का सतत उपयोग कर रहे हैं। हालांकि, जनजातियों और जैव-विविधता संरक्षण के बीच इस संबंध को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। वन भूमि के अतिक्रमण, औद्योगिक विकास, अवैध शिकार, और जलवायु परिवर्तन ने इन पारिस्थितिकी तंत्रों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। साथ ही, जनजातीय समुदायों को भी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं जैसे गरीबी, शिक्षा की कमी, और स्वास्थ्य सुविधाओं की अनुपलब्धता का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी पारंपरिक ज्ञान प्रणाली और आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इन चुनौतियों के बावजूद, जनजातीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान और सतत जीवन शैली को जैव-विविधता संरक्षण में शामिल करना संभावनाओं को उजागर करता है। समुदाय आधारित संरक्षण पहल, स्थानीय और राज्य सरकार की योजनाओं के साथ तालमेल बिठाकर, इन चुनौतियों से निपटने में सहायक हो सकती हैं। शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम, स्थानीय संसाधनों का सतत प्रबंधन, और पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण के माध्यम से जनजातियों को संरक्षण प्रयासों में मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है। इस प्रकार,

जनजातियों की स्थिति को सशक्त बनाना और जैव-विविधता संरक्षण के प्रयासों को बढ़ावा देना मध्य प्रदेश के सतत विकास में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

कूटशब्द: जनजातीय संस्कृति, जैव-विविधता संरक्षण, पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक भागीदारी, सतत विकास, इत्यादि।

परिचय

मध्य प्रदेश, जिसे अक्सर भारत का दिल कहा जाता है, एक विशाल पारिस्थितिक और सांस्कृतिक विविधता वाला क्षेत्र है। यह अनेक आदिवासी जनजातियों का घर है, जिनमें गोंड, भील, बैगा, और कोरकू शामिल हैं, जिन्होंने सदियों से इन भूमि पर निवास किया है और प्राकृतिक पर्यावरण के साथ एक घनिष्ठ संबंध बनाए रखा है (शर्मा और जैन, 2019)। राज्य में विविध परिदृश्य हैं, जो घने जंगलों और नदी प्रणालियों से लेकर शुष्क क्षेत्रों और उपजाऊ मैदानों तक फैले हुए हैं, जो इसकी समृद्ध जैव विविधता में योगदान करते हैं (चौधरी, 2016)। यह जैव विविधता न केवल पारिस्थितिकी संतुलन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि आदिवासी समुदायों के सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है (दास, 2018)।

मध्य प्रदेश के आदिवासी जनजातियों ने ऐसे अनोखे जीवन शैली विकसित किए हैं, जो प्राकृतिक पर्यावरण से गहराई से जुड़े हुए हैं। उनके पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ, जिनमें कृषि, औषधि, और संसाधन प्रबंधन से संबंधित प्रथाएँ शामिल हैं, स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र की गहरी समझ पर आधारित हैं (रॉय, 2020)। ये प्रथाएँ पीढ़ियों से चली आ रही हैं और क्षेत्र में जैव विविधता संरक्षण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं (सिंह और मेहता, 2015)। हालांकि, समकालीन सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ आदिवासी समुदायों और उनके द्वारा संरक्षित जैव विविधता दोनों के लिए महत्वपूर्ण खतरे प्रस्तुत करती हैं (वर्मा और गुप्ता, 2021)।

- मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों का ऐतिहासिक संदर्भ

मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों का इतिहास समृद्ध परंपराओं और सांस्कृतिक प्रथाओं का एक ताना-बाना है, जो भूमि से गहराई से जुड़ा हुआ है। ये समुदाय परंपरागत रूप से अपनी आजीविका के लिए वन संसाधनों पर निर्भर रहे हैं, जिनका उपयोग वे स्थायी तरीके से करते हैं, जो पारिस्थितिक संतुलन सुनिश्चित करता है (पटेल, 2019)। भारत की सबसे बड़ी आदिवासी समूहों में से एक, गोंड जनजाति, मध्य प्रदेश के जंगलों के साथ एक दीर्घकालिक संबंध रखती है, जहाँ वे स्थानांतरित कृषि, शिकार, और संग्रह करते हैं (झा, 2018)। इसी प्रकार, बैगा जनजाति

अपनी विशिष्ट कृषि प्रथाओं और आध्यात्मिक मान्यताओं के लिए जानी जाती है, जो प्रकृति की पवित्रता को महत्व देती है (मिश्रा, 2016)।

आदिवासी समाजों को ऐतिहासिक रूप से, राजनीतिक और आर्थिक रूप से, दोनों ही स्तरों पर हाशिए पर रखा गया है, जिसने उनके संसाधनों और अधिकारों तक पहुँच को प्रभावित किया है (भट्टाचार्य, 2017)। इस हाशिए पर रखने को औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक नीतियों द्वारा बढ़ावा दिया गया है, जिन्होंने पारंपरिक भूमि अधिकारों की तुलना में औद्योगिक विकास को प्राथमिकता दी है (राव, 2021)। इसके परिणामस्वरूप, कई आदिवासी समुदाय अपने पूर्वजों की भूमि से विस्थापित हो गए हैं, जिससे पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक पहचान का नुकसान हुआ है (सेन, 2020)।

- मध्य प्रदेश में जैव विविधता

मध्य प्रदेश भारत के सबसे जैव विविध राज्यों में से एक है, जहाँ कई प्रजातियाँ पाई जाती हैं जो इस क्षेत्र के लिए अद्वितीय हैं (जोशी, 2015)। राज्य के जंगल, जो इसके भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 30% कवर करते हैं, वन्यजीवों से भरपूर हैं, जिनमें बाघ, तेंदुआ, और हाथी जैसी प्रतिष्ठित प्रजातियाँ शामिल हैं (सिन्हा और शर्मा, 2019)। कान्हा, बांधवगढ़, और पेंच राष्ट्रीय उद्यान जैसी संरक्षित क्षेत्र इन प्रजातियों के संरक्षण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और कई अन्य वन्यजीवों के लिए महत्वपूर्ण आवास के रूप में कार्य करते हैं (तिवारी, 2018)।

मध्य प्रदेश की जैव विविधता न केवल एक प्राकृतिक संपत्ति है बल्कि एक सांस्कृतिक भी है, क्योंकि यह आदिवासी समुदायों की आजीविका और परंपराओं का समर्थन करती है (अग्रवाल, 2020)। जंगल इन समुदायों को भोजन, औषधि, और शिल्प के लिए कच्चा माल प्रदान करते हैं, जो उनकी आर्थिक आजीविका के लिए आवश्यक हैं (देसाई, 2016)। इसके अलावा, कई आदिवासी विश्वास और रीति-रिवाज प्राकृतिक दुनिया के साथ जुड़े हुए हैं, जो जैव विविधता के प्रति गहरी सम्मान को दर्शाते हैं (दास, 2018)।

- आदिवासी समुदायों और जैव विविधता के सामने चुनौतियाँ

अपने सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत की समृद्धि के बावजूद, मध्य प्रदेश कई चुनौतियों का सामना कर रहा है जो उसके आदिवासी समुदायों और जैव विविधता की स्थिरता को खतरे में डालती हैं। सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है कृषि, खनन, और औद्योगिक परियोजनाओं के लिए वन भूमि का अतिक्रमण (कुमार, 2017)। ऐसी

गतिविधियाँ निवास स्थान के विनाश, जैव विविधता के नुकसान, और आदिवासी समुदायों के विस्थापन का कारण बनती हैं (भट्टाचार्य, 2017)।

पर्यावरणीय गिरावट के अलावा, आदिवासी समुदायों को सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें गरीबी, शिक्षा तक पहुँच की कमी, और अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल शामिल हैं (रॉय, 2020)। ये चुनौतियाँ कानूनी और संस्थागत बाधाओं से बढ़ी हुई हैं, जो उनके भूमि अधिकारों का दावा करने और संसाधन प्रबंधन से संबंधित निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने की क्षमता को सीमित करती हैं (राव, 2021)।

जलवायु परिवर्तन एक और महत्वपूर्ण खतरा प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह उन पारिस्थितिक तंत्रों को बदल देता है जिन पर आदिवासी समुदाय निर्भर करते हैं। वर्षा के पैटर्न में परिवर्तन, चरम मौसम की घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि, और कृषि उत्पादकता में बदलाव इन समुदायों की आजीविका को सीधे प्रभावित करते हैं (चौधरी, 2016)। परिणामस्वरूप, ऐसी अनुकूलन रणनीतियों का विकास करना अत्यंत आवश्यक है जो आदिवासी समाजों और जैव विविधता दोनों की लचीलापन बढ़ा सकें (वर्मा और गुप्ता, 2021)।

- संरक्षण और सतत विकास के लिए संभावनाएँ

चुनौतियों के बावजूद, मध्य प्रदेश में जैव विविधता के संरक्षण और आदिवासी समुदायों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण अवसर मौजूद हैं। इनमें से एक अवसर पारंपरिक ज्ञान का लाभ उठाने में निहित है, जो सतत संसाधन प्रबंधन में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है (दास, 2018)। इस ज्ञान को आधुनिक संरक्षण प्रथाओं के साथ एकीकृत करके, अधिक प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त संरक्षण रणनीतियों का निर्माण किया जा सकता है (सिंह और मेहता, 2015)।

सामुदायिक-आधारित संरक्षण पहल ने प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाने में आशाजनक परिणाम दिखाए हैं (वर्मा और गुप्ता, 2021)। ये पहल अक्सर स्थानीय समुदायों, सरकारी एजेंसियों, और गैर-सरकारी संगठनों के बीच साझेदारी शामिल करती हैं ताकि संरक्षण योजनाओं को विकसित किया जा सके जो स्वदेशी लोगों की आवश्यकताओं और मूल्यों के साथ संरेखित हों (शर्मा और जैन, 2019)। इस प्रकार के दृष्टिकोण न केवल जैव विविधता के संरक्षण में मदद करते हैं बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देते हैं (रॉय, 2020)।

इसके अलावा, सरकारी नीतियाँ और कार्यक्रम आदिवासी समुदायों के अधिकारों और आजीविका का समर्थन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं (सेन, 2020)। भूमि अधिकारों को पहचानने और लागू करने, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुँच में सुधार करने, और सतत आजीविका के लिए समर्थन प्रदान करके, राज्य आदिवासी समुदायों को फलने-फूलने के लिए एक सक्षम वातावरण बना सकता है (राव, 2021)।

चर्चा

मध्य प्रदेश के आदिवासी समुदायों और क्षेत्र की जैव विविधता के बीच जटिल संबंध संस्कृति और प्रकृति के बीच गहरे जुड़े संबंधों का प्रमाण हैं। यह संबंध आदिवासी समाजों और उनके निवास पारिस्थितिकी प्रणालियों दोनों के अस्तित्व और स्थिरता के लिए आवश्यक है। हालाँकि, जैसा कि परिचय में बताया गया है, इस सहजीवी बंधन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिसमें निवास स्थान का विनाश, सामाजिक-आर्थिक हाशिए पर होना और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें पारंपरिक ज्ञान, आधुनिक संरक्षण प्रथाएं और सहायक सरकारी नीतियां शामिल हों।

- संरक्षण में पारंपरिक ज्ञान की भूमिका

पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान (टीईके) मध्य प्रदेश में जैव विविधता संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। सतत कृषि, वन प्रबंधन और वन्यजीव संरक्षण जैसी स्वदेशी प्रथाएं सदियों से विकसित हुई हैं, जो प्रभावी संसाधन प्रबंधन में अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं जो पारिस्थितिकी संतुलन के साथ मेल खाती हैं। ये प्रथाएं अक्सर प्रकृति के प्रति गहरे सम्मान और स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र की समझ में निहित होती हैं, जो उन्हें सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और टिकाऊ संरक्षण रणनीतियों के विकास के लिए मूल्यवान बनाती हैं (दास, 2018)।

आधुनिक संरक्षण प्रयासों में टीईके को शामिल करने से उनकी प्रभावशीलता बढ़ सकती है। उदाहरण के लिए, सामुदायिक-आधारित संरक्षण पहल, जो प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन करने के लिए आदिवासी समुदायों को सशक्त बनाती हैं, ने आजीविका का समर्थन करते हुए जैव विविधता को संरक्षित करने में आशाजनक परिणाम दिखाए हैं (सिंह और मेहता, 2015)। इस तरह की पहल स्थानीय समुदायों के बीच स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देती है, यह सुनिश्चित करती है कि संरक्षण प्रयास दीर्घकालिक में टिकाऊ हों।

- सामाजिक-आर्थिक हाशिए की चुनौतियाँ

संरक्षण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के बावजूद, आदिवासी समुदाय अक्सर सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं जो संसाधन प्रबंधन में पूरी तरह से भाग लेने की उनकी क्षमता को बाधित करते हैं। गरीबी, शिक्षा की कमी और अपर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल महत्वपूर्ण बाधाएं हैं जो इन समुदायों की संरक्षण गतिविधियों में शामिल होने की क्षमता को सीमित करती हैं (रॉय, 2020)। इसके अलावा, कानूनी और संस्थागत ढांचे अक्सर आदिवासी समुदायों के भूमि अधिकारों को पर्याप्त रूप से मान्यता नहीं देते हैं, जिससे संसाधन उपयोग और भूमि स्वामित्व पर संघर्ष होते हैं (राव, 2021)।

इन सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का समाधान करना आदिवासी समुदायों को संरक्षण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सशक्त बनाना आवश्यक है। इसे नीतियों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है जो भूमि अधिकारों को पहचानते और लागू करते हैं, आवश्यक सेवाओं तक पहुंच में सुधार करते हैं और टिकाऊ आजीविका का समर्थन करते हैं। राज्य आदिवासी समुदायों के लिए सक्षम वातावरण बनाकर उनके पारंपरिक ज्ञान और कौशल को संरक्षण प्रयासों के लिए उपयोग कर सकता है।

- जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

जलवायु परिवर्तन मध्य प्रदेश में जैव विविधता और आदिवासी समुदायों दोनों के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा करता है। वर्षा के पैटर्न में परिवर्तन, चरम मौसम की घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति और कृषि उत्पादकता में बदलाव इन समुदायों की आजीविका को सीधे प्रभावित करते हैं (चौधरी, 2016)। जैसे-जैसे पारिस्थितिक तंत्र बदलते हैं, संसाधन प्रबंधन का मार्गदर्शन करने वाला पारंपरिक ज्ञान नई चुनौतियों का समाधान करने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता है।

पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक अनुसंधान दोनों को शामिल करने वाली अनुकूलन रणनीतियों का विकास आदिवासी समुदायों और पारिस्थितिक तंत्र की लचीलापन बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। स्थानीय समुदायों, सरकारी एजेंसियों और गैर-सरकारी संगठनों के बीच सहयोगात्मक प्रयास ज्ञान और संसाधनों के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बना सकते हैं, जिससे समुदायों को बदलती परिस्थितियों के अनुकूल बनने में सक्षम बनाया जा सके (वर्मा और गुप्ता, 2021)।

- सतत विकास के लिए अवसर

चुनौतियों के बावजूद, मध्य प्रदेश में सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण अवसर मौजूद हैं। पारंपरिक ज्ञान और सामुदायिक-आधारित संरक्षण की ताकत का लाभ उठाकर, प्रभावी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील संरक्षण रणनीतियों का निर्माण करना संभव है। इसके अतिरिक्त, आदिवासी समुदायों के अधिकारों और आजीविका का समर्थन करने वाली सरकारी नीतियां संरक्षण के अनुकूल माहौल को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं (सेन, 2020)।

अंत में, मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों और जैव विविधता के बीच संबंध संस्कृति और प्रकृति के चौराहे का अनूठा अवसर प्रदान करता है। चुनौतियों का समाधान करके और अवसरों का लाभ उठाकर, आदिवासी समुदायों के कल्याण को बढ़ावा देना और भविष्य की पीढ़ियों के लिए क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण को सुनिश्चित करना संभव है। यह दृष्टिकोण न केवल पारिस्थितिकी स्थिरता का समर्थन करता है बल्कि आदिवासी समुदायों की सांस्कृतिक विरासत और पहचान को भी मजबूत करता है।

निष्कर्ष

मध्य प्रदेश की समृद्ध जैव विविधता और आदिवासी समुदायों के बीच का संबंध प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर का एक जटिल ताना-बाना प्रस्तुत करता है। यह संबंध पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों पर आधारित है, जो सतत संसाधन प्रबंधन और पारिस्थितिकी संतुलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, आदिवासी समुदायों को आज अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे कि निवास स्थान का विनाश, सामाजिक-आर्थिक हाशिए पर होना, और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान का समन्वय शामिल हो। सामुदायिक-आधारित संरक्षण पहलें, जो आदिवासी समुदायों को संसाधन प्रबंधन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाती हैं, जैव विविधता संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इसके अलावा, सरकारी नीतियों को आदिवासी अधिकारों और आजीविका का समर्थन करने की दिशा में सुधारित किया जाना चाहिए, ताकि एक सहायक वातावरण बनाया जा सके। सतत विकास के लिए इन पहलुओं का समन्वय मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकता है और जैव विविधता के दीर्घकालिक संरक्षण को सुनिश्चित कर सकता है। इस तरह

के प्रयास न केवल प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा करेंगे बल्कि सांस्कृतिक धरोहर और आदिवासी पहचान को भी सुदृढ़ करेंगे।

संदर्भ

1. चौधरी, आर. (2016). मध्य प्रदेश में जनजातीय जैव विविधता और संरक्षण रणनीतियाँ। पर्यावरण अनुसंधान और विकास पत्रिका, 10(3), 459-466.

2. शर्मा, एस., & जैन, ए. (2019). मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत: चुनौतियाँ और संभावनाएँ। भारतीय विज्ञान इतिहास पत्रिका, 54(1), 45-57.

3. दास, पी. (2018). मध्य भारत में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ और जैव विविधता संरक्षण। अंतरराष्ट्रीय जैव विविधता विज्ञान, पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएँ और प्रबंधन पत्रिका, 14(3), 170-180.

4. रॉय, एम. के. (2020). पारंपरिक पारिस्थितिकी ज्ञान और सतत विकास: मध्य प्रदेश से अध्ययन। पारिस्थितिकी और समाज, 25(2), 12.

5. सिंह, एन., & मेहता, आर. (2015). जैव विविधता संरक्षण में स्वदेशी समुदायों की भूमिका: मध्य प्रदेश से एक अध्ययन। अंतरराष्ट्रीय सतत विकास और विश्व पारिस्थितिकी पत्रिका, 22(6), 534-544.

6. वर्मा, ए., & गुप्ता, डी. (2021). भारत में सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से जैव विविधता संरक्षण: मध्य प्रदेश का एक केस स्टडी। पर्यावरण योजना और प्रबंधन पत्रिका, 64(5), 891-908.

7. भट्टाचार्य, आर. (2017). मध्य प्रदेश में आदिवासी समुदायों के सामने सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ। सामाजिक परिवर्तन समीक्षा, 15(1), 51-67.

8. पटेल, एस. (2019). मध्य भारत में आदिवासी समुदायों का इतिहास और संस्कृति: एक अवलोकन। भारतीय मानवशास्त्री, 49(2), 85-102.

9. झा, वी. (2018). मध्य भारत की गोंड जनजाति: एक नृवंशीय अध्ययन। जनजातीय अनुसंधान पत्रिका, 22(2), 109-125.

10. मिश्रा, आर. (2016). मध्य प्रदेश में बैगा जनजाति की वन-आधारित आजीविका। वन अर्थशास्त्र पत्रिका, 28, 38-47.

11. राव, पी. (2021). मध्य प्रदेश में भूमि अधिकार और आदिवासी पहचान: एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य। दक्षिण एशियाई अध्ययन पत्रिका, 37(3), 329-346.

12. सेन, एस. (2020). मध्य भारत में औपनिवेशिक नीतियाँ और आदिवासी भूमि अधिकार। भारत का ऐतिहासिक पत्रिका, 49(1), 67-82.

13. कुमार, ए. (2017). भारत में आदिवासियों का विस्थापन और हाशिए पर जाना: मध्य प्रदेश से केस अध्ययन। अंतरराष्ट्रीय सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 5(2), 150-163.

14. जोशी, के. (2015). मध्य प्रदेश में जैव विविधता हॉटस्पॉट: संरक्षण स्थिति और चुनौतियाँ। जैव विविधता और संरक्षण, 24(12), 3043-3061.

15. सिन्हा, आर., & शर्मा, पी. (2019). मध्य प्रदेश में वन्यजीव संरक्षण: संरक्षित क्षेत्रों की समीक्षा। वन्यजीव अनुसंधान पत्रिका, 5(1), 23-38.

16. तिवारी, डी. (2018). मध्य प्रदेश की स्थानिक वनस्पतियाँ और जीव: एक पारिस्थितिक अध्ययन। भारतीय पारिस्थितिकी पत्रिका, 45(2), 292-298.

17. अग्रवाल, बी. (2020). मध्य प्रदेश में जैव विविधता का आर्थिक महत्व। पारिस्थितिक अर्थशास्त्र, 172, 106625.

18. देसाई, एम. (2016). मध्य भारत में वन संसाधन और आदिवासी आजीविका: एक केस अध्ययन। ग्रामीण विकास पत्रिका, 35(3), 351-367.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation